रामास्वामी पेरियार की विचारधारा की विवेचना

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निर्देशक

शोधार्थी
हजारी राम

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

2023

अनुक्रमणिका

1.शोध परिचय

2.शोध अध्ययन की आवश्यकता

3.शिक्षा की परिभाषाएं

4.शोध समस्या

5.तकनीकी शब्दावली

6.शोध विधि

7.शोध के चर

8.शोध के उद्धेश्य

9.परिकल्पना

10.अध्ययन में अपनाये जाने वाली विधि

11.शोध का परिसीमन

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध एवं परिचय

पेरियार की विचारधारा में मुख्य स्थान मानववाद की समानता है। उन्होने जातिवाद व ब्राहम्णवाद का विरोध किया। उनके अनुसार इन वर्गों का विरोध करके ही दलित समाज का उत्थान किया जा सकता है।

पेरियार ने अपनी विचारधारा पर चलते हुए अंत तक हिन्दू धर्म से उत्पन्न असमानता और छुआछुत का विरोध करते रहे।

उन्होने इस अन्याय के खिलाफ एक लम्बा आंदोलन शुरू किया और अंत तक अपने इस उद्धेश्य में लगे रहें।

उनका कहना था कि स्त्री पुरूष के बीच उत्पन्न सामाजिक भेदभाव समाप्त होने चाहिए।

हिन्दू समाज के मध्य जाति,धर्म, देश, वर्ण आदि के नाम पर जो भेदभाव है वो समाप्त होने चाहिए। मानव को अपने परिश्रम का पूरा लाभ मिलना चाहिए।

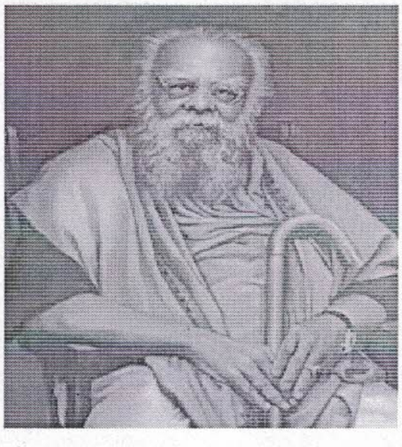

उन्होने अपनी विचारधारा को गति देने के लिए "सच्ची रामायण" नामक विवादास्पद कृति की रचना की। जिसमें उन्होने अपने तथ्यों से साबित किया कि रामायण धार्मिक ग्रन्थ नहीं है,बल्कि एक राजनितिक ग्रन्थ है। जो मानव–मानव में भेदभाव को बढा देता है।

पेरियार ने तर्कवाद, आत्मसम्मान और महिलाओं के अधिकारों और जाति उन्मूलन के सिंद्धातों को बढावा दिया है। उन्होने दक्षिण भारत में गैर ब्राहम्ण, द्रविड लोगों के अधिकारों के लिए एक लम्बा आंदोलन किया।

उन्होने पाखण्डवाद का विरोध किया। उनका मुख्य उद्धेश्य समान अधिकारों के साथ–साथ एक जाति विहिन और वर्ग रहित समाज की स्थापना था। जिसमें मानव जाति पर कोई अत्याचार न हों। उनका उद्धेश्य महिलाओं को पुरूषों के बराबर अधिकार दिलाना था।

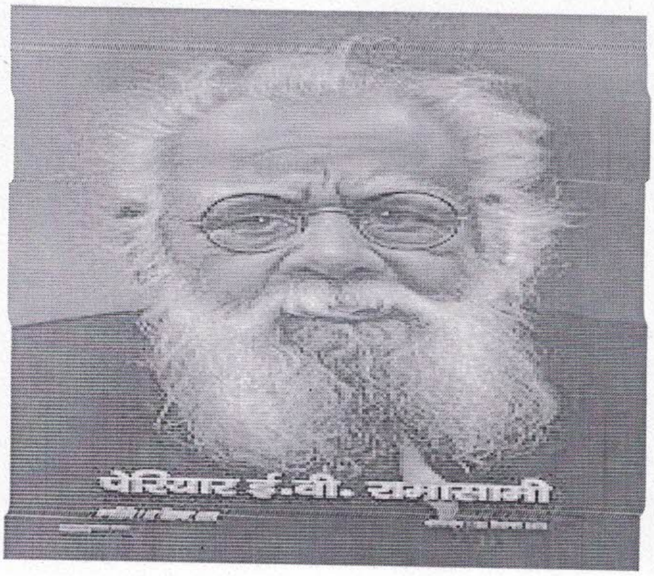

शोध अध्ययन की आवश्यकता

रामास्वामी पेरियार के विचारधारा पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ है। इनकी विचारधारा पर शोध करने से मानव जाति में विधमान पाखण्डवाद, जातिवाद और महिलाओं के अधिकारों के हनन की बातें निकलकर सामने आयेगी और उनके निराकरण में यह शोध कारगर साबित होगा।

1.रामास्वामी पेरियार की विचारधारा पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ हैं।

2.पेरियार की विचारधारा पर शोध करने से मानव जाति में विघमान पाखण्डवाद,जातिवाद और महिलाओं के अधिकारों के हनन की बातें निकलकर सामने आयेगी। और उनके निराकरण में यह शोध कारगर साबित होगा।

3.पेरियार की विचारधारा पर शोध करने से दक्षिण में प्रचलित रूढीवादी परम्परायें सामने आयेगी।

मानविकी एवं समाजशास्त्र की परिभाषा

मानविकी एवं समाजशास्त्र एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के अन्दर मौजूद जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है, और मानविकी एवं समाजशास्त्रीय वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने की योग्यता विकसित करती है।

मैक्स वेबर के अनुसार, ''समाजशास्त्र वह विज्ञान हैं जो सामाजिक क्रिया के व्याख्यात्मक बोध को प्रस्तुत करने का प्रयास करता हैं जिससे उसकी प्रक्रिया व प्रभावों की बुद्धिसंगत व्याख्या की जा सकें।

गिंसबर्ग के अनुसार,''समाजशास्त्र मानवीय अंतक्रियाओं और अंर्तसंबधों उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है।

शोध समस्या

रामास्वामी पेरियार की विचारधारा की विवेचना

तकनीकी शब्दावली

मानविकी का अर्थ –

मानविकी वह शैक्षणिक विषय हैं जिनमें प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञानों के मुख्यतः अनुभवजन्य बदलाव के विपरीत इसमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक विधियों का इस्तेमाल कर मानविकि का अध्ययन किया जाता है।

मानविकी अध्ययन का उद्धेश्य–

इसके अध्ययन से मानव का मानसिक विकास होता है और वह आगे चलकर मानवीय मुद्धे पूरे जोर तरीके से उठायेगा।

आत्मसम्मान –

यह दक्षिण भारत में पेरियार द्वारा चलाया गया आंदोलन का नाम है जिन्होने इसके माध्यम से मानवता को समानता पर लाने का कार्य किया।

शोध विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुंसधान में कई अध्ययन विधियॉ प्रचलित है। इस शोध समस्या के लिए शोधकर्मी नें सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि–

सर्वेक्षण विधि में उन लोगों से प्रश्न पूछकर ऑकडें इकट्ठे कियें जाते है। जिनके बारे में माना जाता है कि उनके पास जानकारी है।

शोध के चर

शोधकर्मी अपनी समस्या से सम्बधित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना अंकित मूल्य रखने वाले गणों की विशेषता या योग्यता का करता है।

'' चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य है'' करलिंगर।

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है

1. प्राथमिक चर– प्राथमिक चर वे मूल आंकडें होते है जिसमें अनुसंधानकर्ता या उसके द्वारा नियुक्त प्रागणक, स्वय सकत्र शामिल होते है।
2. द्वितीय चर – द्वितीय आंकडे.प्रकाशित या अप्रकाशित स्त्रोत से प्राप्त होते है।

शोध के उद्धेश्य

मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्धेश्य का निर्धारण करता है। उद्धेश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते है तथा परिश्रम, धन व्यय हो जाता है। अतः सार्थक प्रयास व बाधित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्धेश्य का निर्धारण किया जाता है।

1. रामास्वामी पेरियार की विचारधारा की विवेचना करना।
2. पेरियार के समय प्रचलित रूढीवादी परम्पराओं को जानना।
3. पेरियार के द्वारा समानता के लिए किये गयें प्रयासों को जानना।
4. पेरियार अपने उद्धेश्य में कहॉ तक सफल हुआ, वह जानना।

शोध की परिकल्पना

पेरियार मुख्य रूप से एक सामाजिक क्रांतिकारी थे। वे एक तर्कशील विद्वान, बुद्धिवादी, अनिश्वरवादी व मानववादी थे। उनका मानना था कि राजनितिक सुधार से पहले सामाजिक सुधार होना चाहिए। इसी विचारधारा पर उन्होने आजीवन कार्य किया।

उनके द्धारा चलाये गये आंदोलन को उनके अनुयायियों ने निरंतर जारी रखा। वर्तमान में उन सामाजिक बुराईयों में कमी आई है। जिनको लेकर उन्होने आंदोलन शुरू किया।

इस शोध के माध्यम से उनकी विचारधारा सामने आयेंगी, व समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने में मदद मिलेंगी।

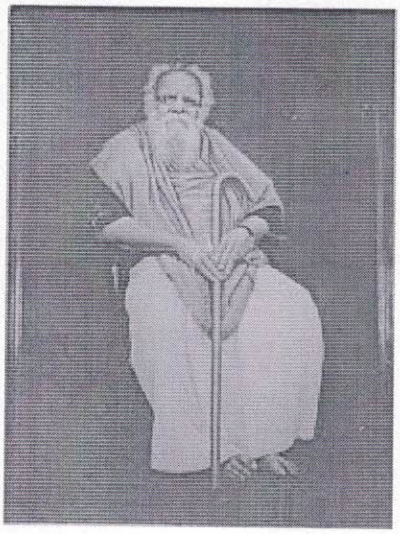

अध्ययन में अपनायें जाने वाली विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया जायेगा। जिसके माध्यम से शोधार्थी अपने ऑकडों एवं तथ्यों को विभिन्न पुस्तकालयों की पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर अपने शोध में रामास्वामी पेरियार की विचारधारा की विवेचना का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

सर्वेक्षण विधि के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित कर सकेगें।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध में पेरियार की विचारधारा की विवेचना पर अध्ययन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।
3. पेरियार की विचारधारा का विवेचनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सच्ची रामायण– 1968
2. पेरियार ई.वी.रामास्वामी नायकर जीवनदर्शन – अजयकुमार
   गौतम बुक सेन्टर
3. कुडी. अरासु – पेरियार